त्रैमासिक ई-पत्रिका, वर्ष 1, अंक 1, जुलाई-सितंबर 2024

निर्भ्रांत

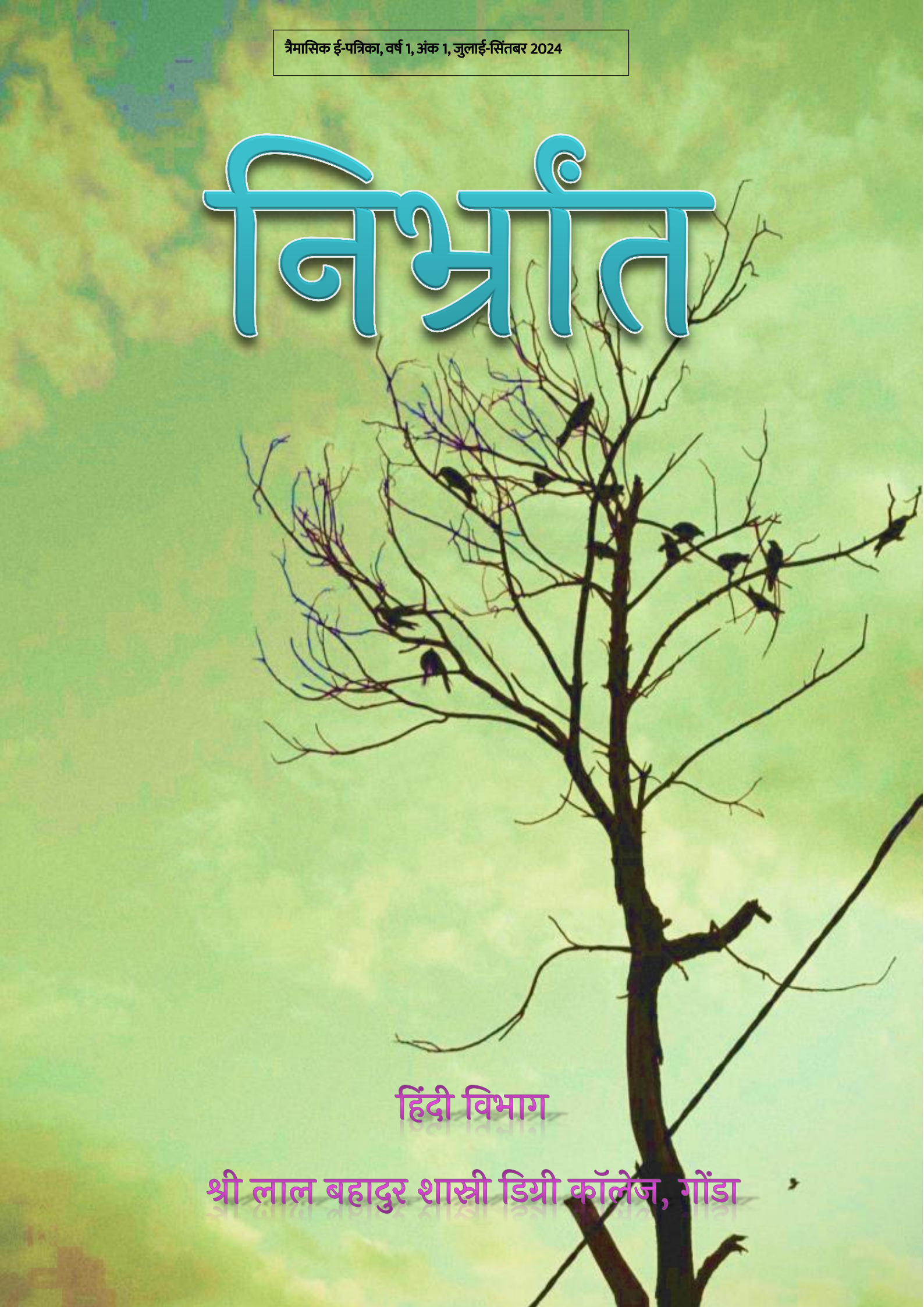

हिंदी विभाग

श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा

हिंदी विभाग

श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज

गोंडा

निर्भ्रांत

जुलाई-सितंबर 2024

त्रैमासिक ई-पत्रिका

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में प्रस्तुत विचार लेखक के अपने हैं, पत्रिका किसी भी प्रकार के मत का समर्थन या खंडन नहीं करती है। साथ ही इन रचनाओं के मौलिक या अप्रकाशित होने का दायित्व सम्पादक का नहीं है।

यह ई पत्रिका निःशुल्क है। इसके लिए विद्यार्थियों या प्राध्यापकों से कोई शुल्क नहीं लिया जाता है। यह हिंदी प्रेमियों तथा हिंदी के प्रचार प्रसार हेतु है।

संपादक – अच्युत शुक्ला (सहायक आचार्य, हिंदी विभाग)

संरक्षक प्रो. रवीन्द्र कुमार प्राचार्य	
प्रधान सलाहकार प्रो. शैलेन्द्र नाथ मिश्र अध्यक्ष एवं आचार्य, हिंदी विभाग	
सलाहकार एवं मार्गदर्शक प्रो. जयशंकर तिवारी आचार्य, हिंदी विभाग	

हिंदी विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा

जुलाई-सितंबर 2024 । वर्ष 01 । अंक 01

	पृष्ठ सं.
संपादकीय	4
विरासत	
(जुलाई माह में जन्म)	
कुँअर बेचैन	5
केदारनाथ सिंह	6
नामवर सिंह	7
(अगस्त माह में जन्म)	
नंदकिशोर आचार्य	8
(सितंबर माह में जन्म)	
भारतेंदु हरिश्चन्द्र	9
रामधारी सिंह दिनकर	10
श्रीकांत वर्मा	11
दुष्यंत कुमार	12
वातायन	
हिंदी दिवस	13
अंतर्दृष्टि	15
आओ हिंदी सीखें	
हिंदी वर्तनी का मानक स्वरूप	16
आलेख	
क्यों पढ़ें हिंदी	19
लघुकथा	
अहम् क्यों करे मानुष	23
विचार	
खुद सुधरें, जग सुधरे	24
गाँव और शहर	25
कविताएँ	
युग निर्माण	26
राह	27
स्त्री	27
चार कविताएँ	27
संघर्ष	29
बेरोजगारी का हाहाकार	30
मेरे कान्हा	30
जगजननी संस्कृत	31
माँ	31
नारी	32
यथार्थ ज्ञान	32
गजल	33
निबंध	
राष्ट्रीय एकता	33
पुस्तक समीक्षा/विमोचन	35
अगले अंक हेतु निर्देश	36

हिंदी विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा

संपादकीय

श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा के हिंदी विभाग की ई-पत्रिका 'निर्भ्रांत' का प्रवेशांक आप सबके सम्मुख है। यह मेरे लिए अत्यंत हर्ष का विषय तो है ही पर साथ ही एक नई जिम्मेदारी के बोध का भी एहसास कराने वाला है। महाविद्यालय के लोकप्रिय, दृढ़प्रतिज्ञ, निष्ठावान एवं यशस्वी प्राचार्य आदरणीय गुरु प्रो. रवीन्द्र कुमार के संरक्षकत्व में यह पत्रिका अनवरत पुष्पित पल्लवित होगी, मुझे यह आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है।

यह ई-पत्रिका हिंदी विभाग के अध्यक्ष, विराट व्यक्तित्व धारणकर्ता और आकाशधर्मा गुरु आदरणीय गुरुवर प्रो. शैलेन्द्र नाथ मिश्र के नवोन्मेषी विचारों का प्रतिफल है। आदरणीय गुरुवर के पास नूतन विचारों और नवाचारों की पुंजीभूत राशि मौजूद है। ई-पत्रिका उस अथाह जल-राशि रूपी विचारों की एक बूँद भर है।

मेरे प्रेरणास्रोत, अत्यंत सहृदय, माँ वीणापाणि के अनन्य साधक, सिद्धांतवादी, सरल व्यक्तित्व के धनी, लब्धप्रतिष्ठ गुरुवर आदरणीय प्रो. जयशंकर तिवारी ने कदम-कदम पर इस ई-पत्रिका हेतु जो मार्गदर्शन दिया है उस हेतु उनका कोटिशः आभार। मुझे हमेशा बेलीक होने पर उन्होंने सतर्क किया और साध्य से ज्यादा साधनों की पवित्रता के बारे में हमेशा सचेत किया। चूँकि स्वयं वे **क्रौंच रश्मि, वागर्थ और संवाहिका** जैसी ख्यातिलब्ध पत्रिकाओं के संपादक रहे हैं, अतएव उनके अनुभव के आलोक से मेरे मन मस्तिष्क का तम विदीर्ण होता रहा।

प्रस्तुत पत्रिका में कुछ स्तम्भों के साथ शुरुआत हो रही है। **विरासत** स्तंभ में हिंदी के उस माह में जन्मे लब्धप्रतिष्ठ साहित्य साधकों का संक्षेप में उल्लेख है, हालांकि हमने इन साहित्य साधकों हेतु किया तो कुछ खास नहीं है पर कम से कम याद तो किया ही जा सकता है। उनके अवदान हेतु हम हमेशा उनके कृतज्ञ रहेंगे । **अंतर्दृष्टि** स्तंभ में मन के भाव अनुवाभों का संप्रेषण है। इसमें गुरुवर प्रो. शैलेन्द्र नाथ मिश्र की कविताएँ हैं। **वातायन** स्तंभ में हिंदी विभाग में हुई गतिविधियों का चित्रण है। **आओ हिंदी सीखें** स्तम्भ में शुद्ध ढंग से हिंदी लिखने पढ़ने बोलने की बातें हैं, आदरणीय गुरुवर प्रो. जयशंकर तिवारी का यह सारगर्भित लेख विद्यार्थियों और हिंदी प्रेमियों के लिए अत्यंत ज्ञानवर्धक है।।**आलेख** के अंतर्गत क्यों हिंदी पढ़ें शीर्षक से रोचक लेख है इसके बाद **लघुकथा, विचार, कविताएँ, गजल, निबंध** आदि स्तंभों में विद्यार्थियों ने अपनी रचनाधर्मिता का परिचय दिया है, विशेषकर मधु दुबे और अभिषेक शुक्ला 'नंदन' ने अपनी सृजनात्मकता का सुखद परिचय दिया है, इसके साथ ही पुस्तक विमोचन के अंतर्गत प्रतिभाशाली छात्र जितेशकांत पाण्डेय की पुस्तक के लोकार्पण की रपट है। आशा है यह प्रवेशांक आपकी स्पृहाओं पर खरा उतरेगा।

- अच्युत शुक्ला
  सहायक आचार्य, हिंदी
  विजयादशमी, 2024, अक्टूबर 12

जुलाई माह में जन्म

कुँअर बेचैन

जन्म	01 जुलाई 1942
निधन	29 अप्रैल 2021
उपनाम	बेचैन
जन्म स्थान	ग्राम उमरी, जिला मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत
कुछ प्रमुख कृतियाँ	
गीत-संग्रह: पिन बहुत सारे (1972), भीतर साँकल: बाहर साँकल (1978), उर्वशी हो तुम (1987), झुलसो मत मोरपंख (1990), एक दीप चौमुखी (1997), नदी पसीने की (2005), दिन दिवंगत हुए (2005), *ग़ज़ल-संग्रह:* शामियाने काँच के (1983), महावर इंतज़ारों का (1983), रस्सियाँ पानी की (1987), पत्थर की बाँसुरी (1990), दीवारों पर दस्तक (1991), नाव बनता हुआ काग़ज़ (1991), आग पर कंदील (1993), आँधियों में पेड़ (1997), आठ सुरों की बाँसुरी (1997), आँगन की अलगनी (1997), तो सुबह हो (2000), कोई आवाज़ देता है (2005); *कविता-संग्रह:* नदी तुम रुक क्यों गई (1997), शब्द: एक लालटेन (1997); पाँचाली (महाकाव्य)	
विविध	
आपका मूल नाम कुँअर बहादुर सक्सेना है।	
जीवन परिचय	
कुँअर बेचैन / परिचय	

स्रोत-
http://kavitakosh.org/kk/%E0%A4%95%E0%A5%81%E0%A4%81%E0%A4%85%E0%A4%B0_%E0%A4%AC%E0%A5%87%E0%A4%9A%E0%A5%88%E0%A4%A8

1.

नदी बोली समन्दर से, मैं तेरे पास आई हूँ।
मुझे भी गा मेरे शायर, मैं तेरी ही-ही रुबाई हूँ॥

मुझे ऊँचाइयों का वह अकेलापन नहीं भाया;
लहर होते हुये भी तो मेरा मन न लहराया;
मुझे बाँधे रही ठंडे बरफ की रेशमी काया।
बड़ी मुश्किल से बन निर्झर, उतर पाई मैं धरती पर;
छुपा कर रख मुझे सागर, पसीने की कमाई हूँ॥

2.

जिसे बनाया वृद्ध पिता के श्रमजल ने
दादी की हँसुली ने, माँ की पायल ने
उस सच्चे घर की कच्ची दीवारों पर
मेरी टाई टँगने से कतराती है।

माँ को और पिता को यह कच्चा घर भी
एक बड़ी अनुभूति, मुझे केवल घटना
यह अंतर ही संबंधों की गलियों में
ला देता है कोई निर्मम दुर्घटना

जिन्हें रँगा जलते दीपक के काजल ने
बूढ़ी गागर से छलके गंगाजल ने
उन दीवारों पर टँगने से पहले ही
पत्नी के कर से साड़ी गिर जाती है।

जब से युग की चकाचौंध के कुहरे ने
छीनी है आँगन से नित्य दिया-बाती

केदारनाथ सिंह

जन्म	07 जुलाई 1934
निधन	19 मार्च 2018
जन्म स्थान	ग्राम चकिया, जिला बलिया, उत्तर प्रदेश, भारत
कुछ प्रमुख कृतियाँ	
अभी बिल्कुल अभी, ज़मीन पक रही है, यहाँ से देखो, अकाल में सारस, उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ, बाघ, तालस्ताय और साइकिल	
विविध	
कविता संग्रह " अकाल में सारस" के लिये साहित्य अकादमी पुरस्कार (1989), मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार, कुमार आशान पुरस्कार (केरल), दिनकर पुरस्कार, जीवनभारती सम्मान (उड़ीसा) और व्यास सम्मान सहित अनेक प्रतिष्ठित सम्मान और पुरस्कार से सम्मानित।	
जीवन परिचय	
केदार नाथ सिंह / परिचय	

स्रोत -
http://kavitakosh.org/kk/%E0%A4%95%E0%A5%87%E0%A4%A6%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%A5_%E0%A4%B8%E0%A4%BF%E0%A4%82%E0%A4%B9

1.

जैसे चींटियाँ लौटती हैं
बिलों में
कठफोड़वा लौटता है
काठ के पास
वायुयान लौटते हैं एक के बाद एक
लाल आसमान में डैने पसारे हुए
हवाई-अड्डे की ओर

ओ मेरी भाषा
मैं लौटता हूँ तुम में
जब चुप रहते-रहते
अकड़ जाती है मेरी जीभ
दुखने लगती है
मेरी आत्मा

2.

झरने लगे नीम के पत्ते बढ़ने लगी उदासी मन की,

उड़ने लगी बुझे खेतों से
झुर-झुर सरसों की रंगीनी,
धूसर धूप हुई मन पर ज्यों —
सुधियों की चादर अनबीनी,

दिन के इस सुनसान पहर में रुक-सी गई प्रगति जीवन की
।

लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा

नामवर सिंह

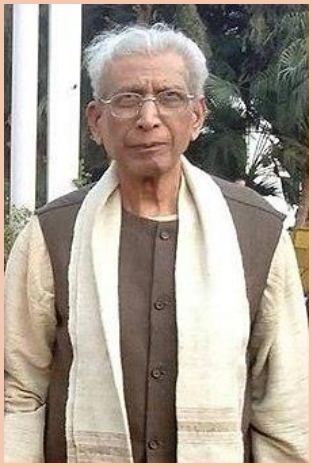

जन्म	28 जुलाई 1926
निधन	19 फ़रवरी 2019
जन्म स्थान	जायतपुर, वाराणसी, उत्तर प्रदेश
कुछ प्रमुख कृतियाँ	
आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, छायावाद, इतिहास और आलोचना, कहानी-नई कहानी, कविता के नए प्रतिमान, दूसरी परम्परा की खोज, वाद-विवाद सम्वाद, कहना न होगा, आलोचक के मुख से।	
विविध	
हिन्दी के प्रमुख समकालीन आलोचक। शलाका सम्मान साहित्य अकादमी पुरस्कार (1971) सहित अनेक प्रतिष्ठित सम्मान और पुरस्कार से से विभूषित।	
जीवन परिचय	
नामवर सिंह / परिचय	

स्रोत-

http://kavitakosh.org/kk/%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%AE%E0%A4%B5%E0%A4%B0_%E0%A4%B8%E0%A4%BF%E0%A4%82%E0%A4%B9

1.

नभ के नीले सूनेपन में
हैं टूट रहे बरसे बादर
जाने क्यों टूट रहा है तन!

बन में चिड़ियों के चलने से
हैं टूट रहे पत्ते चरमर
जाने क्यों टूट रहा है मन!

घर के बर्तन की खन-खन में
हैं टूट रहे दुपहर के स्वर
जाने कैसा लगता जीवन!

2.

दिन बीता,
पर नहीं बीतती,
नहीं बीतती साँझ

नहीं बीतती,
नहीं बीतती,
नहीं बीतती साँझ

ढलता-ढलता दिन
दृग की कोरों से ढुलक न पाया

मुक्त कुन्तले!
व्योम मौन मुझ पर तुम-सा ही छाया

मन में निशि है
किन्तु नयन से
नहीं बीतती साँझ

हिंदी लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा

अगस्त माह में जन्म

नंदकिशोर आचार्य

मूल नाम : नंदकिशोर आचार्य

जन्म : 31 अगस्त 1945 | बीकानेर, राजस्थान

नंदकिशोर आचार्य का जन्म 31 अगस्त, 1945 को बीकानेर, राजस्थान में हुआ। उन्होंने अँग्रेज़ी साहित्य और इतिहास में उच्च शिक्षा प्राप्त की और पत्रकार एवं प्राध्यापक के रूप में कार्यरत रहे। इसके समानांतर उनका लेखन भी जारी रहा जहाँ उन्होंने कविता, नाटक, आलोचना, शिक्षा-सभ्यता-संस्कृति विषयक विमर्श और संपादन के क्षेत्र में अपना रचनात्मक योगदान किया है। वह मूलतः एक कवि हैं जिनका कविता-परिसर में प्रवेश 'चौथा सप्तक के साथ हुआ। 2019 में उन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रदान किए जाने के बाद उनके कवि-कर्म और काव्य-मंतव्य पर गंभीर चर्चा के आग्रह की शुरुआत हुई है।

स्रोत-

https://www.hindwi.org/poets/nand-kishore-acharya/profile?gad_source=1&gclid=CjwKCAjwgfm3BhBeEiwAFfxrGwzgA5ZVcqDZibbPVSnK3GCWi7h1YzpWZ86H9N79Spv5438gmUh_rhoCRWwQAvD_BwE

1.

साधु ने भरथरी को
दिया वह फल—
अमर होने का

भरथरी ने रानी को
दे दिया

रानी ने प्रेमी को अपने
प्रेमी ने गणिका को
और गणिका ने लौटा दिया
फिर भरथरी को वह
— भरथरी को वैराग्य हो
आया

वह नहीं समझ पाया:
हर कोई चाहता है
अमर करना
प्रेम को अपने ।

2.

वर्षा वसंत की
दूर पहाड़ी पर
कोई कैसे वहाँ तक
जाए

सोचते हुए उसको
ढाल लूँ
दो प्यालियों में
चाय।

हिंदी विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा

सितंबर माह में जन्म

भारतेंदु 'बाबू' हरिश्चन्द्र

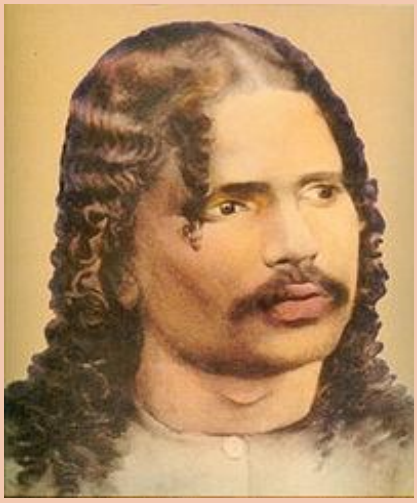

मूल नाम : भारतेंदु हरिश्चंद्र

जन्म : 9 सितंबर 1850 | वाराणसी, उत्तर प्रदेश

निधन : 6 जनवरी 1885 | वाराणसी, उत्तर प्रदेश

स्रोत - https://www.rekhta.org/poets/bharatendu-harishchandra/profile?lang=hi

1.

अंगरेज राज सुख साज सजे सब भारी।
पै धन विदेश चलि जात इहै अति ख्वारी।
ताहू पै महंगी काल रोग बिस्तारी।
दिन दिन दूने दुःख ईस देत हा हा री॥
सबके ऊपर टिक्कस की आफत आई।
हा हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई॥

2.

"सेवक गुनीजन के चाकर चतुर के हैं,
कविन के मीत चित हित गुन गानी के।
सीधेन सो सीधे, महा बांके हम बाकेन सो,
हरीचन्द नगद दमाद अभिमानी के॥
चाहिबे की चाह, काहू की न परवाह नेही नेह के,
दिवाने सदा सूरत निवानी के।

3.

चूरन खावै एडिटर जात।
जिनके पेट पचै नहिं बात॥
चूरन साहेब लोग जो खाता।
साहा हिंद हजम कर जाता॥
चूरन पूलिसवाले खाते।
सब कानून हजम कर जाते॥
ले चूरन कर ढेर, बेचा टके सेर॥

4.

दुनिया में हाथ पैर हिलाना नहीं अच्छा।
मर जाना पै उठके कहीं जाना नहीं अच्छा॥
बिस्तर प मिस्ले लोथ पड़े रहना हमेशा।
बंदर की तरह धूम मचाना नहीं अच्छा॥

हिंदी विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा

रामधारी सिंह 'दिनकर'

उपनाम : 'दिनकर'

मूल नाम : रामधारी सिंह दिनकर

जन्म : 23 सितंबर 1908 | सिमरिया, बिहार

निधन : 24 अप्रैल 1974 | चेन्नई, तामिलनाडु

स्रोत- – https://www.hindwi.org/poets/ramdhari-singh-dinkar/profile

1.
धुँधली हुई दिशाएँ, छाने लगा कुहासा,
कुचली हुई शिखा से आने लगा धुआँ-सा।
कोई मुझे बता दे, क्या आज हो रहा है;
मुँह को छिपा तिमिर में क्यों तेज़ रो रहा है?
दाता, पुकार मेरी, संदीप्ति को जिला दे;
बुझती हुई शिखा को संजीवनी पिला दे।
प्यारे स्वदेश के हित अंगार माँगता हूँ।
चढ़ती जवानियों का श्रृंगार माँगता हूँ।

2.
रे, रोक युधिष्ठिर को न यहाँ,
जाने दे उनको स्वर्ग धीर,
पर, फिरा हमें गाण्डीव-गदा,
लौटा दे अर्जुन-भीम वीर।
कह दे शंकर से, आज करें
वे प्रलय-नृत्य फिर एक बार।
सारे भारत में गूँज उठे,
'हर-हर-बम' का फिर महोच्चार।

3.
हुँकारों से महलों की नींव उखड़ जाती,
साँसों के बल से ताज हवा में उड़ता है,
जनता की रोके राह, समय में ताव कहाँ ?
वह जिधर चाहती, काल उधर ही मुड़ता है।

4.
रात यों कहने लगा मुझसे गगन का चाँद,
आदमी भी क्या अनोखा जीव होता है!
उलझनें अपनी बनाकर आप ही फँसता,
और फिर बेचैन हो जगता, न सोता है।

श्रीकांत वर्मा

जन्म	18 सितम्बर 1931
निधन	25 मई 1986
जन्म स्थान	बिलासपुर, छत्तीसगढ़
कुछ प्रमुख कृतियाँ	
भटका मेघ (1957), मायादर्पण (1967 दिनारम्भ (1967), जलसाघर (1973), मगध (1984)।	
विविध	
1973 में मध्यप्रदेश सरकार का 'तुलसी पुरस्कार'; 1983 में 'आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी' पुरस्कार; 1980 में 'शिखर सम्मान'; 1984 में कविता पर केरल सरकार का कुमार आशान पुरस्कार; 1987 में मगध नामक कविता संग्रह के लिये साहित्य अकादमी पुरस्कार। साहित्यिक पत्रिका "कृति" के सम्पादक रहे।	

स्रोत-

http://kavitakosh.org/kk/%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%80%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%82%E0%A4%A4_%E0%A4%B5%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A4%BE

1.

चाहता तो बच सकता था
मगर कैसे बच सकता था
जो बचेगा
कैसे रचेगा

पहले मैं झुलसा
फिर धधका
चिटखने लगा
कराह सकता था
मगर कैसे कराह सकता था
जो कराहेगा
कैसे निबाहेगा

न यह शहादत थी
न यह उत्सर्ग था
न यह आत्मपीड़न था
न यह सज़ा थी

तब

क्या था यह
किसी के मत्थे मढ़ सकता था
मगर कैसे मढ़ सकता था
जो मढ़ेगा कैसे गढ़ेगा।

2.

मैं एक भागता हुआ दिन हूँ
और रुकती हुई रात
मैं नहीं जानता हूँ,
मैं ढूँढ़ रहा हूँ अपनी शाम
या ढूँढ़ रहा हूँ अपना प्रात: !

दुष्यंत कुमार

जन्म : 1 सितंबर 1933 | राजपुर नवादा, उत्तर प्रदेश
निधन : 30 दिसंबर 1975 | भोपाल, मध्य प्रदेश

स्रोत –
https://www.hindwi.org/poets/dushyant-kumar/profile

1.
हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी,
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में,
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।

सिर्फ़ हंगामा खड़ा करना मेरा मक़सद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

2.
इस नदी की धार में ठंडी हवा आती तो है,
नाव जर्जर ही सही, लहरों से टकराती तो है।

एक चिनगारी कहीं से ढूँढ़ लाओ दोस्तो,
इस दीये में तेल से भीगी हुई बाती तो है।

एक खँडहर के हृदय-सी, एक जंगली फूल-सी,
आदमी की पीर गूँगी ही सही, गाती तो है।

ए चादर साँझ ने सारे नगर पर डाल दी,
यह अँधेरे की सड़क उस भोर तक जाती तो है।

निर्वचन मैदान में लेटी हुई है जो नदी,
पत्थरों से, ओट में जो-जाके बतियाती तो है।

दुख नहीं कोई कि अब उपलब्धियों के नाम पर,
और कुछ हो या न हो, आकाश-सी छाती तो है।

हिंदी विभाग, श्री लालबहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा

वातायन
हिंदी विभाग

हिन्दी दिवस आयोजन रपट

श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोण्डा में 14 सितंबर 2024 को हिन्दी दिवस मनाया गया। महाविद्यालय के हिन्दी विभाग ने अपने विभागीय दिवंगत आचार्यों, पूर्व प्राचार्य स्व० डॉ० छोटे लाल दीक्षित एवं स्व० डॉ० अनंत रघुनाथ सहस्रबुद्धे की स्मृति में दो प्रतियोगिताओं का आयोजन किया - निबंध प्रतियोगिता एवं श्रुत लेख प्रतियोगिता।

निबन्ध प्रतियोगिता में 28 विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया जिसका शीर्षक था 'मेरे लिए हिन्दी का महत्त्व' जिसमें प्रथम स्थान दीप्ति (बी •ए• तृतीय सेमेस्टर), द्वितीय स्थान साक्षी सिंह (एम•ए•(हिन्दी) तृतीय सेमेस्टर), तृतीय स्थान निधि शुक्ला (एम•ए•(राजनीतिशास्त्र) प्रथम सेमेस्टर) तथा सांत्वना पुरस्कार आदर्श सिंह (बी•एस-सी (एजी) प्रथम सेमेस्टर) को प्राप्त हुआ।

श्रुत लेख प्रतियोगिता में 34 विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। जिसमें प्रथम स्थान तरुण कुमार (बी•ए• तृतीय सेमेस्टर), द्वितीय स्थान साक्षी सिहं (एम•ए• (हिन्दी) तृतीय सेमेस्टर), तृतीय स्थान शक्ति पाण्डेय (बी•ए• पंचम सेमेस्टर) तथा सांत्वना पुरस्कार दीप्ति (बी•ए•तृतीय सेमेस्टर) को प्राप्त हुआ।

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो• रवीन्द्र कुमार ने उक्त आयोजन के अध्यक्षीय उद्‌बोधन में हिन्दी दिवस की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए समस्त प्रतिभागियों को शुभकामनाएँ दी। कार्यक्रम में महाविद्यालय के गणमान्य शिक्षकों ने उपस्थित रह कर विद्यार्थियों का उत्साहवर्द्धन किया। हिन्दीविभाग के सहायक आचार्य श्री• पवन कुमार सिंह तथा प्राध्यापिका डॉ• मुक्ता टंडन ने निर्णायक दायित्व का निर्वाह किया।

द्वारा – डॉ. मुक्ता टण्डन

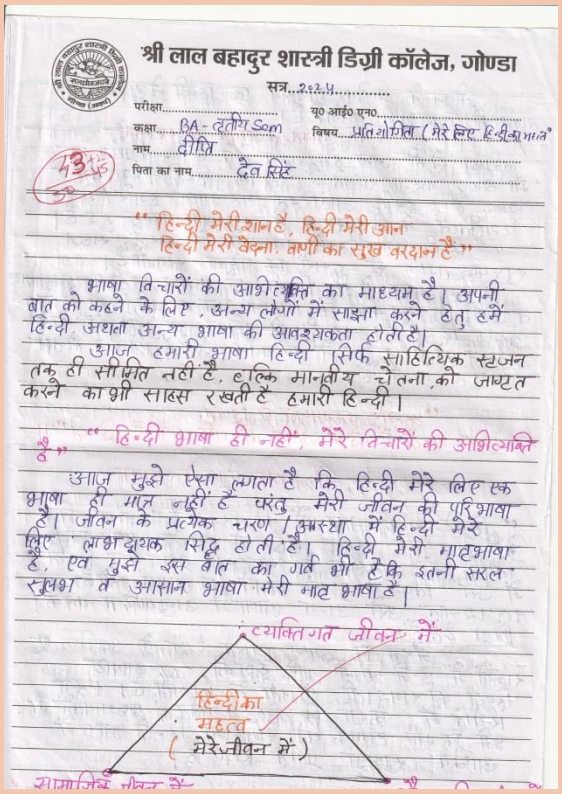

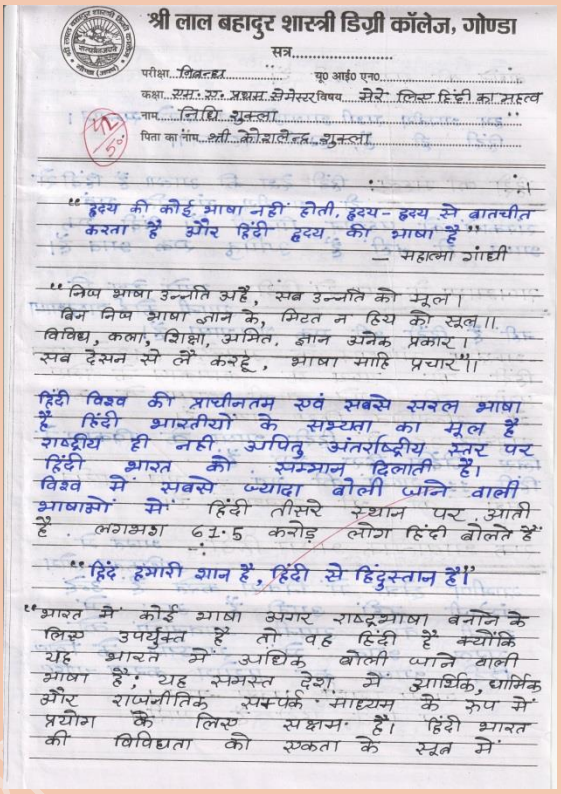

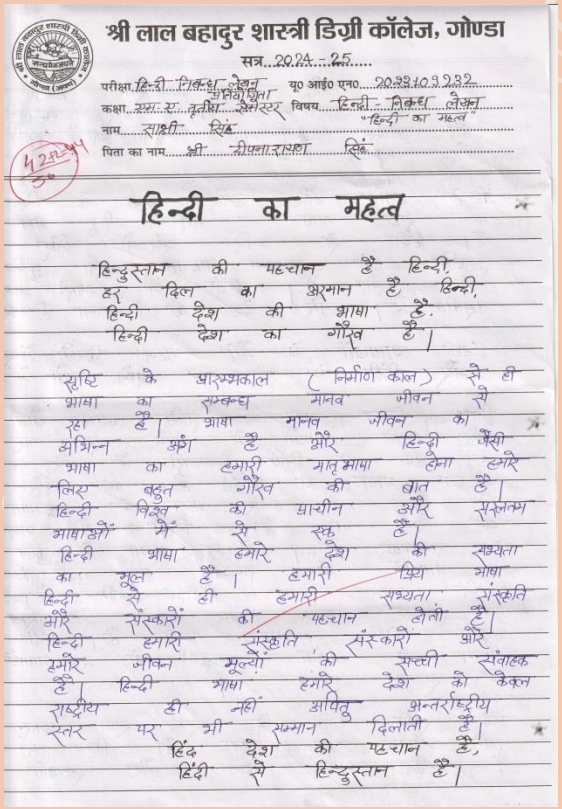

उपर्युक्त प्रतियोगिता की सर्वश्रेष्ठ उत्तरपुस्तिकाओं का मुख पृष्ठ

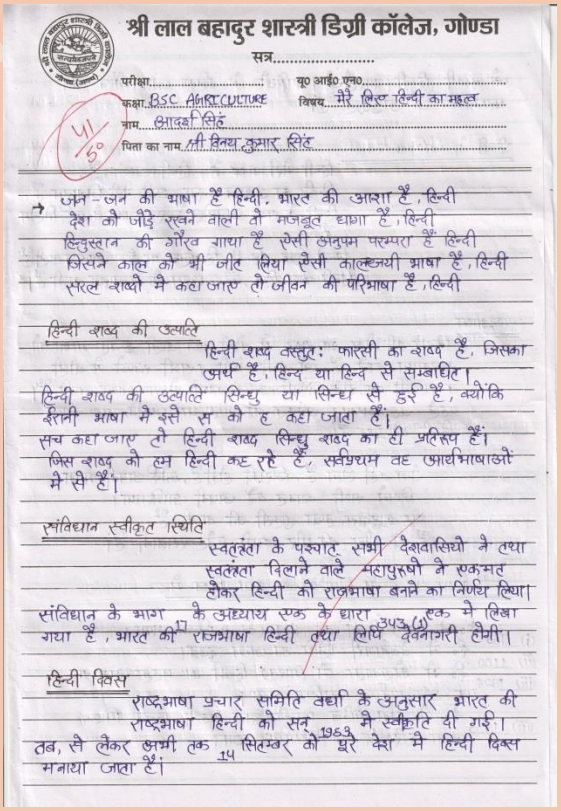

अंतर्दृष्टि

छिटक आयी है
शहर पर चाँदनी

ओढ़ कुहरा
थम गया है
वाहनों का ज्वार

और मुख औधें पड़ा
फुटपाथ
बंजर सड़क पर

हिलती रहीं परछाइयाँ
ओस की गीली सुबह
के साथ –

मर गया था वह
भूख के इतिहास को
अध्याय देकर

काश!!!
सारी चाँदनी
ये शहर, ये परछाइयाँ
रोटी हो गयी होतीं।

भाषा के अंधेरे से
निकलकर
घर चल मित्र

जहाँ माँ प्रतीक्षारत है,
जहाँ बहन सगुन उठाती है,
जहाँ पिता बुढ़ापे से लड़ता है।

इस देश के बजट
और काव्यशास्त्र में-

न ये हैं
न तुम हो

भुजाओं की फड़फड़ाहट
ठंडी बहसों को
न सौंप मित्र
घर चल

तुम्हारी इन्हीं भुजाओं के
आकाश
का
उन्हें इंतजार है।

डॉ. शैलेन्द्र नाथ मिश्र
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा,
उत्तर प्रदेश
चलभाष- 6393253590

हिंदी विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा

आओ हिंदी सीखें

हिंदी वर्तनी का मानक रूप

किसी भी समृद्ध एवं विज्ञानसम्मत भाषा की वर्तनी एकरूप होती है और होनी चाहिए। विशेषकर तब तो और भी, जब वह विश्वभाषा बनने के लिए अग्रसर हो, क्योंकि वर्तनी एवं रूप की अनेकरूपता और अराजकता अन्य भाषाभाषियों के लिए उस भाषा को सीखने में अवरोध पैदा करती है।

हिंदी अनेक कारणों से विस्तृत जगत में प्रसरणशील भाषा के रूप में गतिमान है। यह जनभाषा है और अपने दम पर न केवल भारत में अपितु अन्य देशों में भी फैलती जा रही है। देश के उन हिस्सों में जहाँ लोग हिंदीतर भाषाओं का व्यवहार करते हैं अथवा देशांतर के वे अधिसंख्य लोग जो हिंदी सीखने हेतु तत्पर हैं, उन्हें विशेष कठिनाई जिन चीजों से होती है उसमें वर्तनीगत बहुरूपताएँ मुख्य हैं।

हिंदी शब्द भंडार में तत्सम, तद्भव, देशज और आगत शब्दों का समावेश है। हिंदी की स्वाभाविक प्रकृति तद्भवता तथा देशजता के प्रति अधिक है। तत्समीकरण भाषा को जटिल बनाती है, परंतु सांस्कृतिक कारणों से यथा- धर्म, संस्कार, अध्यात्म, कर्मकांड आदि से अविच्छिन्न संस्कृत शब्दों का भारतीय जनमानस और उसके पारंपरिक जीवन पर गहरा प्रभाव है।

हिंदी शब्द-भंडार में तत्सम शब्दों की वर्तनी प्रायः संस्कृत व्याकरण से निश्चित-निर्धारित होती रही है। निस्संदेह संस्कृत व्याकरण में प्रत्येक स्तर पर वैज्ञानिकता विद्यमान है परंतु बदले दौर में टंकण, मुद्रण, छपाई एवं कंप्यूटरीकरण आदि के कारण हिंदी सरलता और संक्षिप्तता की ओर अग्रसर हुई है।

डिजिटल युग में वही भाषा अपना अस्तित्व बनाए रख सकेगी जो परिवर्तनशील है। हिंदी ने इस शर्त को सहर्ष स्वीकार किया है। यही कारण है कि वह अपना भौगोलिक तथा संख्यात्मक विस्तार करने के साथ ही प्रौद्योगिकी के अनुकूल बनी रह सकी है। इस विकास यात्रा में हिंदी ने अपने तत्सम शब्दों की वर्तनी में भी यथावश्यक परिवर्तन-संशोधन कर अपना मानक रूप सुनिश्चित किया है। जैसे- वे तत्सम शब्द जिनमें कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग में से किसी के पंचमाक्षर यथा ङ, ञ,ण ण,म की ध्वनि उच्चारण में आती है तो उसके स्थान पर हिंदी ने अनुस्वार को अपनाया है।

संस्कृत शब्द	मानक हिंदी	संस्कृत शब्द	मानक हिंदी	संस्कृत शब्द	मानक हिंदी	संस्कृत शब्द	मानक हिंदी	संस्कृत शब्द	मानक हिंदी
कङ्गन	कंगन	खण्ड	खंड	चञ्चल	चंचल	सन्ध्या	संध्या	सम्पादक	संपादक
अङ्क	अंक	गोण्डा	गौंडा	निरञ्जन	निरंजन	अन्तर्गत	अंतर्गत	चम्पक	चंपक
गङ्गा	गंगा	प्रचण्ड	प्रचंड	गञ्जा	गंजा	बुन्देले	बुंदेले	सम्बन्ध	संबंध
पङ्ख	पंख	दण्ड	दंड	झञ्झा	झंझा	हिन्दी	हिंदी	निशुम्भ	निशुंभ
कङ्घा	कंघा	ठण्ड	ठंड	सञ्जू	संजू	पन्थ	पंथ	शम्भु	शंभु

ये पंचमाक्षरों वाले तत्सम शब्द निश्चित रूप से व्याकरण एवं उच्चारण विज्ञान की दृष्टि से परिशुद्ध हैं, परंतु भाषा अपनी सरलोन्मुखी प्रवृत्ति के कारण इन भारी – भरकम शब्दरूपों को नहीं ढो सकती। इसीलिए मानक हिंदी ने अधिकांशतः

अनुस्वार (बिंदी) को ही अपनाया है। भाषिक प्रयोग में यह द्वैध जितनी जल्दी समाप्त हो जाए उतना ही अच्छा है। खुद 'हिंदी' की वर्तनी में भी यह द्विरूपता – हिंदी-हिन्दी - बनी हुई है। इसके साथ ही कतिपय तत्सम शब्द ऐसे हैं कि उनका मूल स्वरूप बदल देने से अर्थान्तर हो जाएगा , इसलिए उन शब्दों को यथावत् चलने देना चाहिए, जैसे- वाङ्मय, तन्मय, अन्य, अन्न, सम्मेलन, सम्मति, चिन्मय, ऋषि आदि।

इन शब्दों के स्थान पर वांगमय, तंमय, अंय, अंन, संमेलन, संमति, चिंमय, रिषि जैसे शब्दों का प्रयोग स्वीकार्य नहीं है। अनुनासिक ध्वनियों के लिए चंद्रबिंदु का प्रयोग (ँ) वहाँ अनिवार्य रूप से करना चाहिए जहाँ उसके अभाव में भ्रम की गुंजाइश हो, यथा : हंस/हँस, हंसना/हँसना, अंगना/अँगना, स्वांग/स्वाँग, रंग/रँग आदि। प्रयोग की दृष्टि से यह भी ध्यातव्य है कि यदि शिरोरेखा के ऊपर कोई मात्रा हो तो चंद्रबिंदु की जगह पर भी अनुस्वार या बिंदी का प्रयोग होगा, जैसे 'कौंच' के स्थान पर 'कोंच' या 'सौंठ' के स्थान पर 'सोंठ'। ऐसे तत्सम शब्द, जिनके मात्रात्मक परिवर्तन से अर्थान्तर हो जाता है तथा अज्ञानतावश उसे तमाम लोग त्रुटिपूर्ण ढंग से लिखने लगते हैं, किसी दृष्टि से उचित नहीं ठहराए जा सकते, जैसे- ग्रहीत, दृष्टव्य, प्रदर्शिनी, अत्याधिक, अनाधिकार, पुनरावलोकन, उपरोक्त आदि। इनके स्थान पर – गृहीत, द्रष्टव्य, प्रदर्शनी, अत्यधिक, अनधिकार, पुनरवलोकन, उपर्युक्त ही स्वीकार्य हैं।

जिन तत्सम शब्दों का हिंदीकरण हो चुका है और वे हिंदी के मानक रूप में स्वीकृत हो चुके हैं, उन्हें बलपूर्वक मूल रूप में प्रयुक्त करने की जरूरत नहीं। हल् चिह्न जिन तत्सम शब्दों — महान, विद्वान आदि के रेखांकित वर्ण — से हट चुका है उसे पुनः योजित करने की जरूरत नहीं है। यद्यपि कुछ भाषाविद् हलंत हटाने के पक्ष में नहीं हैं, उनका तर्क है कि इससे तत्सम शब्दों का मूल स्वरूप तो बिगड़ेगा ही, साथ ही उनसे जोड़कर बनने वाले शब्दों का स्वरूप भी गड़बड़ होगा, जैसे संसत्सदस्य, वाग्जाल आदि।

आशय यह है कि मानकीकृत हिंदी, जो केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली आयोग, केंद्रीय भाषा संस्थान, केंद्रीय राजभाषा आयोग आदि नियमनकारी संस्थाओं की अनुशंसाओं से युक्त है, पूरे देश में अपनाई जानी चाहिए। बोलचाल में हिंदी क्षेत्र अलग–अलग बोलियों के प्रभावस्वरूप विविधता से परिपूर्ण है पर लिखित रूप में एकरूपता हिंदी के विकास में सहायक होगी। प्रसन्नता की बात यह है कि हिंदी समाचार पत्रों में यह एकरूपता इन बीते वर्षों में बढ़ी है।
जिन शब्दों में हिंदीविदों के अंतर्गत मतभेद थे, वे भी अधिकांश हल कर लिए गए हैं और हिंदी कुछेक अपवादों को छोडकर एकरूपता की ओर तेजी से बढ़ी है। जैसे 'अंतरराष्ट्रीय' शब्द मनमाने ढंग से 'अंतर्राष्ट्रीय' और 'अंताराष्ट्रिय' की तरह काफी समय से लिखे जा रहे थे पर अब सभी समाचार पत्रों में मानक रूप 'अंतरराष्ट्रीय' चलने लगा है।

जो लोग अब भी अमानक प्रयोग कर रहे हैं उन्हें सुधारना चाहिए। 'उज्जवल' और 'आर्शीवाद' जैसे

सर्वथा त्रुटिपूर्ण शब्दों के स्थान पर 'उज्ज्वल' और 'आशीर्वाद' शब्दों का प्रयोग ही स्वीकार्य है।

वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावलीआयोग की संस्तुति को निम्नलिखित रूप में देखा जा सकता है :

(1) "'क' और 'फ' के संयुक्ताक्षर 'संयुक्त', 'पक्का', 'दफ्तर' आदि की तरह बनाए जाएँ, न कि संयुक्ताक्षरों को ऊपर नीचे योजित कर।

(2) ङ , छ , ट , ठ , ड , ढ , द , और ह के संयुक्ताक्षर हल् चिह् लगाकर ही बनाए जाएँ, यथा : वाङ्मय, बुड्ढा, विद्या, चिह्न, ब्रह्मा आदि।

(3) संयुक्त 'र' के प्रचलित तीनों रूप यथावत् रहेंगे, यथा : प्रकार, धर्म, राष्ट्र।" 1

इन अनुशंसाओं के मूल में सरलता, सुबोधता, टंकण-सुविधा का विशेष ध्यान है और भ्रम की स्थिति से बचाने का प्रयास भी। हाइफन या योजक(—) का विधान द्वंद्व समास — माता-पिता, राम-लक्ष्मण, हँसी-मज़ाक— में हो पर तत्पुरुष — गंगाजल, रामराज्य, ग्रामगीत, जनभाषा — में नहीं। इसी प्रकार "समस्त पदों में प्रति, मात्र, यथा आदि अव्यय पृथक् नहीं लिखे जाएँगे, जैसे— प्रतिदिन, प्रतिशत, मानवमात्र, निमित्तमात्र, यथासमय, यथोचित आदि। यह सर्वविदित नियम है कि समास होने पर समस्त पद एक माना जाता है, अतः उसे व्यस्त रूप में न लिखकर एक साथ लिखना ही संगत है।" 2

त्रुटिपूर्ण शब्दों यथा :'चिन्ह', 'ब्रम्हा' और 'ब्राम्हन' के स्थान पर क्रमशः शुद्ध रूप 'चिह्न', 'ब्रह्मा', 'ब्राह्मण' लिखा जाना चाहिए। हिंदी क्रियाओं में गयी, आयी, गये, आये को क्रमशः गई, आई, गए, आए लिखा जाना चाहिए। भारतीय हिंदी परिषद् सहित और जो लोग यह तर्क देते हैं कि 'गया', 'आया' की स्त्रीलिंग 'गयी', 'आयी' होना चाहिए और इसी आधार पर'गये,'आये' शब्दरूप को ठीक मानते हैं, उन्हें भाषा की प्रकृति समझनी चाहिए। जिस तरह 'किया', 'पिया', 'लिया', 'दिया' आदि के स्त्रीलिंग रूप में — कियी, पियी, लियी, दियी न होकर 'य' का लोप होकर 'की', 'पी', 'ली', 'दी' होता है, उसी तरह 'गया', 'आया' ,'खाया', 'रोया' आदि के स्त्रीलिंग रूप में'य' का लोप होकर'गई', 'आई', 'खाई''रोई'होता है। हिंदी संक्षेपप्रिय भाषा है, वह अनावश्यक शब्दों-वर्णों का बोझ क्यों ढोएगी। प्रसिद्ध भाषाविद् आचार्य किशोरीदास वाजपेयी का इस विषय में यही मंतव्य है —"यह तर्क कि 'गया' का स्त्रीलिंग 'गयी' होना चाहिए— गलत है। क्योंकि अवधी जो साहित्यिक भाषा है आवा, लावा, पावा, आदि के स्त्रीवर्गीय रूप आवी, लावी, पावी न करके आई, लाई, पाई करती है— 'सुखु बिदेह कर बरनि न जाई। जनम दरिद्र मनहु निधि पाई।" 3

इसी तरह जाये, जायेगा/जावेगा , आये, आयेगा/आवेगा अशुद्ध एवं अमानक है, इसके स्थान पर— जाए, जाएगा, आए, आएगा —जैसे रूप मानक एवं शुद्ध हैं। इसी क्रम में जायेंगे, खायेंगे, जायें, खायें आदि में क्रमशः जाएँगे, खाएँगे, जाएँ, खाएँ का प्रयोग मानक है। ऐसे ही – उठिये, बैठिये, लीजिये, चाहिये, लिये, किये, गये, आये – के स्थान पर उठिए, बैठिए, लीजिए, चाहिए, लिए, किए, गए, आए जैसे प्रयोग मानक एवं उचित हैं। इसी प्रकार 'हुआ', 'हुई' शब्द मानक है न कि हुवा,

हुयी ; तथा विशेषण शब्द नया का बहुवचनात्मक शब्द 'नए' तथा स्त्रीवर्गीय शब्द 'नई' मानक है। इसके बावजूद जहाँ 'य' वर्ण मूल तत्व के रूप में हो वहाँ उसका लोप उचित नहीं होगा, जैसे — स्थायी, अव्ययीभाव, दायित्व आदि। इन्हें स्थाई, अव्यईभाव, दाइत्व लिखना उचित नहीं होगा।

विशेषण एवं क्रिया विशेषण के तद्धितीय प्रयोगों में प्रकृति का प्रथम दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है, जैसे- उंचाई, निचाई, मिठाई, छुटपन, बतरस ; न कि ऊंचाई, नीचाई, मीठाई, छोटपन, बातरस। इसी तरह दुपहर, दुपहरी, इकमुश्त, इकतरफा, इकतारा, इकलौता, इकबारगी, निचला, पिछला, पिछड़ा शुद्ध रूप है न कि दोपहर, दोपहरी, एकमुश्त, एकतरफा, एकतारा, एकलौता, एकबारगी, नीचला, पीछला, पीछड़ा आदि। 4

आगत शब्दों में विशेषकर अरबी-फारसी के नुक्ता वाले शब्द, जो हिंदी भाषा में सहजता से समाविष्ट हो चुके हैं और हिंदी के रंग-ढंग में परिवर्तित हो चुके हैं, उन्हें हिंदी रूप में ही स्वीकार किया जाना चाहिए। क़, ख़, ग़, ज़, फ़—इन पाँच ध्वनियों में क़ और ग़ युक्त शब्दों को हिंदी ने प्रायः नुक्ताविहीन रूप में अपनाया है, जैसे- कलम, किला, दाग आदि, न कि क़लम, क़िला, दाग़। ख़, ज़, फ़ – जैसी ध्वनियों की जहाँ मूल रूप में विवक्षा अपेक्षित हो, वहाँ उसी रूप में लिखना चाहिए। अंग्रेजी से आई अर्धविवृत'ऑ'ध्वनि उन अंग्रेजी शब्दों में जहाँ अभीष्ट हो, अवश्य लगाई जाए, जैसे डॉक्टर, कॉफी, ऑफिस, कॉलेज आदि। संख्यावाचक शब्दों में कई शब्दों को सुशिक्षित जन भी अलग –अलग तरह से लिखते हैं।

एक से सौ तक संख्यावाचक शब्दों का मानक रूप निम्नलिखित है : इसे इसी तरह लिखा जाना चाहिए —

एक, दो, तीन, चार, पाँच, छह, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह, बारह, तेरह, चौदह, पंद्रह, सोलह, सत्रह, अठारह, उन्नीस, बीस, इक्कीस, बाईस, तेईस, चौबीस, पच्चीस, छब्बीस, सत्ताईस, अट्ठाईस, उनतीस, तीस, इकतीस, बत्तीस, तैंतीस, चौंतीस, पैंतीस, छत्तीस, सैंतीस, अड़तीस, उनतालीस, चालीस, इकतालीस, बयालीस, तैंतालीस, चवालीस, पैंतालीस, छियालीस, सैंतालीस, अड़तालीस, उनचास, पचास, इक्यावन, बावन, तिरपन, चौवन, पचपन, छप्पन, सतावन, अट्ठावन, उनसठ, साठ, इकसठ, बासठ, तिरसठ, चौंसठ, पैंसठ, छियासठ, सड़सठ, अड़सठ, उनहत्तर, सत्तर, इकहत्तर, बहत्तर, तिहत्तर, चौहत्तर, पचहत्तर, छिहत्तर, सतहत्तर, अठहत्तर, उनासी, अस्सी, इक्यासी, बयासी, तिरासी, चौरासी, पचासी, छियासी, सतासी, अठासी, नवासी, नब्बे, इक्यानवे, बानवे, तिरानवे, चौरानवे, पचानवे, छियानवे, सतानवे, अठानवे, निन्यानवे, सौ । 5

डॉ० हरदेव बाहरी के अनुसार—"हिंदी में कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके दो - दो रूप चल रहे हैं। फिलहाल इनमें एकरूपता लाने की आवश्यकता नहीं समझी गई। कुछ उदाहरण- गरदन/गर्दन, गरमी/ गर्मी, बिलकुल/बिल्कुल, कुरसी/कुर्सी, बरदाश्त/बर्दाश्त, वापिस/वापस, दूकान/दुकान, बीमारी/बिमारी। (नोट- इनमें दुकान, बीमारी ही शुद्ध है।)" 6

संबोधन 'भाइयों' और 'बहनों' के स्थान पर 'भाइयो' और 'बहनो' होना चाहिए। इसमें अनुस्वार लगाना ठीक नहीं । डॉ० हरदेव बाहरी आगे लिखते हैं- " लिंग आत्मा, वायु, मृत्यु, आयु, आदि संस्कृत के शब्द हिंदी में स्त्रीलिंग हैं। आत्मा को कुछ लोग पुल्लिंग रूप में रूप में प्रयुक्त करते हैं—यह ठीक नहीं। कुदाल, पिस्तौल, साइकिल, प्याज, आलू, तौलिया का लिंग संदिग्ध बना हुआ है इन्हें पुल्लिंग मान लेना चाहिए। पदनामों में लिंगभेद करने की आवश्यकता नहीं है — मंत्राणी, सचिवा, अध्यापिका, शिक्षिका, निदेशिका, अध्यक्षा, आयकर अधिकारिणी, प्रयोग से बाहर हो गए हैं। मंत्री, सचिव, अध्यापक, शिक्षक, निदेशक, अध्यक्ष, आयकर अधिकारी आदि उभयलिंगी हैं। राजदूत

कैसे राजदूती और राष्ट्रपति या कुलपति से राष्ट्रपत्नी या कुलपत्नी कितना भोड़ा लगता है।" 7 निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि किसी भी व्यापक भाषा और विशेषकर राजभाषा के लिए यह बहुत जरूरी होता है कि वह बोलने और लिखने में एकरूप हो। उच्चारण स्तर पर विविधता तो होगी ही, उसे समाप्त नहीं किया जा सकता। परंतु लिपि एवं वर्तनी के स्तर पर बहुरूपता कदापि उचित नहीं, उसे अवश्य ध्यान दिया जाना चाहिए। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के पहले हिंदी भाषा में बहुरूपताएँ बहुत उलझनें पैदा करती थीं। भाषा के विभिन्न रूपों का नियमन करके उन्होने 'सरस्वती'पत्रिका के जरिए इसे वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया। एक-एक शब्द पर चली बहसें तत्कालीन पत्रिकाओं में साक्ष्य के तौर पर मौजूद हैं। कामताप्रसाद गुरु, किशोरीदास वाजपेयी, जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी, धीरेन्द्र वर्मा, ब्रजेश्वर वर्मा, माता प्रसाद गुप्त, हरदेव बाहरी, बाबूराम सक्सेना, भोला नाथ तिवारी, देवेंद्र नाथ शर्मा, रामचंद्र वर्मा, कैलाश चंद्र भाटिया आदि सैकड़ों विद्वानों ने इस दिशा में अथक प्रयत्न किए हैं, जिसके फलस्वरूप हिंदी की संरचना सुदृढ़ एवं काफी हद तक एकरूप हो सकी है। हमें भाषिक प्रयोग के स्तर पर 'सब चलता है' जैसे चलताऊ दृष्टिकोण से उबरना होगा, तभी हम अपनी भाषा को इतना समर्थ बना सकेंगे कि वह विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर हो सकेगी।

संदर्भ:

1- प्रशासनिक शब्दावली, हिन्दी-अंगेजी, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग नई दिल्ली प्रकाशन
संस्करण-2009, पृ०- 463-464
2- वही, पृ०- 464
3- किशोरीदास वाजपेयी: हिंदी की वर्तनी तथा शब्द-विश्लेषण, राजधानी ग्रंथागार नई दिल्ली, दूसरा अध्याय
4- वही, चौथा अध्याय
5- डॉ० हरदेव बाहरी: हिंदी भाषा, अभिव्यक्ति प्रकाशन इलाहाबाद,सं० 2000, पृ०-109
6- वही, पृ०-108-109
7- वही, पृ० -113

डॉ. जय शंकर तिवारी
प्रोफेसर, हिंदी विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा,
उत्तर प्रदेश
चलभाष- 09936733601

आलेख

क्यों पढ़ें हिन्दी ?

हम हिन्दी क्यों पढ़े? यह यक्ष प्रश्न हम सभी को ज्ञात है और क्यों न हो आज का समय उपयोगिता का जो ठहरा, जो उपयोगी है वह हमने ग्रहण कर लिया जो योग्य न लगा उसे हटा दिया ।क्या हमारी हिन्दी भी अनुपयोगी हो गयी है जो आज की पीढ़ी उसे लिखने और पढ़ने से दूर भागती है ? हिन्दी में बोलना शान के खिलाफ समझती है ।

क्यों ऐसा हो रहा है, हम इस पतन को देखने के लिए भीष्म पितामह की तरह विवश खड़े हैं। हिन्दी की किताबें अभिजात्य साहित्य की कोटि में आकर 'सजावटी वस्तु" में नहीं बदल रही है? चारों ओर अँग्रेजी माध्यम का बोल बाला है, वो करियर के रास्ते खोलती है [ऐसा प्रायोजित भी किया है और मान भी लिया गया है।],तकनीकी और उच्च शिक्षा में काम आती है आदि उसके गुण हैं । भाषा तो अब भाव उत्पन्न करने की जगह 'रोबोट का रिमोट" होती जा रही है। हम भूल गए हैं कि हम मनुष्य हैं और हमने संवेदना ताक पर रख दी है।

अपनी भाषा को कोने में धर कर यदि हम किसी अन्य भाषा का सत्कार कर भी ले तो भी वह कभी "अपनी" नहीं बन सकती । लेकिन विवशता तो यही है कि "हिन्दी में कुछ नहीं हो सकता" , "हिन्दी में कुछ भी लिखोगे पास हो जाओगे ", "अरे हिन्दी में क्या पढ़ना" ये जुमले हमें आक्रोशित नहीं करते वरन लज्जित करते हैं। जैसे द्यूत में युधिष्ठिर सर झुका के द्रोपदी का अपमान सहता रहा हम भी कमोबेश यही करते हैं । हिन्दी को संविधान ऊँचा दर्जा दिलाएगा। ये कहकर हमारे कर्तव्य की इतिश्री नहीं होगी। इस तरह तो हम सबको अपनी बात मानने के लिए विवश ही करेंगे, हुज़ूर दिल किसी की गुलामी नहीं मानता । दिल जीतना बेहद जरूरी है, आखिर राजा वही है जो दिल पर राज करे। प्रत्येक भारतीय के मन में हिन्दी के प्रति सम्मान कैसे जागेगा , जब हम खुद ही उसका सम्मान नहीं करेंगे ?

आज की पीढ़ी [बच्चे और युवा] कहती मिल जाती है कि 'ओह गॉड इस हिन्दी से पीछा कब छूटेगा ? ", "जल्दी से 10 और 12 हो मैं हिन्दी छोड़ दूँ" "आप कैसे पढ़ा लेते हो हमसे तो पढ़ी ही नहीं जाती, मात्राएं कैसे रटी आपने" ये सुनकर गुस्सा नहीं आता शर्म आती हैं जिसे अपनी भाषा रटनी पड़े उसे क्या और कैसे समझाया जाए ?

यही वो देश है जहां "चंद्रकांता " को पढ़ने के लिए मनोयोग से हिन्दी सीखी गयी जहां विदेशों से रामायण पर शोध करने विदेशी आते हैं, विदेशों में जिसे पढ़ने का रुझान है, आज वही अपने देश में बेगानी है। कहने को "हिन्दी दिवस " का झुनझुना पकड़ा दिया गया हैं और 15 दिन "हिन्दी में कार्य करें", "हिन्दी में बात करें" आदि सिर्फ सुनने में प्यारे लगते हैं पर 15 दिन बाद सुप्रभात पुनः गुड मार्निंग में बदल जाता है।

पुनः मुद्दे पर आते हैं हिन्दी के प्रति उदासीनता के कारण क्या हैं ये जानना जरूरी है । कहने को

हिन्दी साहित्य समृद्ध है कहानी, उपन्यास, गल्प, किस्सागोई और न जाने क्या क्या हमें मिलता है। परंतु जब हम हिन्दी भाषा का भंडार देखते हैं तो कोश में कुछ कमी महसूस होती है । अन्य भाषा की आलोचना करना सरल है कि अँग्रेजी ने हिन्दी का किला फतेह कर लिया ,पर ये शोध किसी ने किया ही नहीं कि ऐसी कौन सी चूक हम "होनहार बिरवानों " ने कर दी जो हिन्दी मोहभंग का शिकार हो गयी ?

मैं फिर कहूँगी अँग्रेजी से हिन्दी की प्रतिद्वंद्विता नहीं है न ही कभी हो सकती है ये दो अलग भाषा अस्तित्व हैं बराबर हैं फिर भी न जाने क्यों इन्हे दुश्मन की तरह प्रायोजित किया जाता है?हिन्दी अँग्रेजी के बँटवारे ने कभी हमें अपनी गलतियां देखने ही नहीं दी। राजनैतिक दखल ,वैधानिक जटिलताएँ कोई बड़ी समस्या नहीं है ,मूल समस्या तो हमारा हृदय है। अनौपचारिकता को औपचारिकता का जामा पहनाने में मशगूल हुए कि हम क्या हैं खुद ही भूल गए । हिन्दी की भी यही दशा हो गयी है बंधु । हमने उसके परिष्कार का काम ही बंद कर दिया है। एक बात आज सर धुनने की इच्छा है कि इतनी करोड़ आबादी वाले देश में लोग "हिन्दी" को जानते हैं या " साहित्यकारों " को ?

हम क्यों नहीं समझते कि बाल मनोविज्ञान का सबसे उल्लेखनीय बिन्दु यही है कि बच्चों के मानसिक स्तर को ध्यान में रखते हुए उन्हें मनोनुकूल बातें नैतिकता एवं संस्कार के साथ समझाई जाए। मुझे ये देख हैरानी हुई कि चीफ की दावत कहानी क्लास 8 [सी.बी.एस.ई.] में पढ़ाई जाती रही। जिस कहानी की सतह के भीतर की परतें हम बी.ए. में उतारते उतारते थक गए वह आठवीं के बच्चे के दिमाग में कैसे घर करेगा ? उसे हिन्दी क्या समझ आएगी? जब वह इस कहानी का मर्म ही नहीं समझ पाएगा तो उसे रटेगा और बंधु रटकर यांत्रिक पीढ़ी तैयार हो सकती है पर भावुक तथा सशक्त पीढ़ी नहीं । ये तो एक छोटा उदाहरण है ऐसे कई और उदाहरण आपको भी मिले होंगे उन्हें आप भी अंक विचार मंच के जरिये सामने ला सकते हैं । युवाओं में हिन्दी-प्रेम का जागरण जरूरी है करियर ,रोजगार तथा महत्वाकांक्षा से ऊपर उठकर उन्हें समझाना होगा कि बंधु "टू स्टेट्स" पढ़ी है तो अब जरा " गुनाहों के देवता", "कामायनी" भी पढ़ो तुम्हारी सोच को नया मुकाम मिल जाएगा। हमें ही ये पहल करनी होगी क्योंकि अब जागरण का समय है । अभी कुछ न किया तो आगे भी सोते ही रह जायेंगे। शेष फिर सार्थक पढ़े, आगे बढ़े ।

डॉ. मुक्ता टण्डन
असि. प्रो., हिंदी
श्री ला.ब.शा.डि.कॉ., गोंडा
मो. 7800782000

लघुकथा

अहम् क्यों करे मानुष !

पिछले दिनों की बात है मैं किन्हीं कारणवश अयोध्या गया हुआ था, जेठ का महीना बीत गया था, तप्त हुई धरती अब वर्षा की प्यासी थी। उन दिनों खूब झमाझम पानी गिरा पर जिस दिन मैं जाने वाला था उससे एक दिन पहले चटख धूप निकली, फिर भी मैने इस आशा और भय के चलते कि अगर कहीं बारिश हुई तो भीग न जाऊँ, छाता अपने साथ ले लिया कि रास्ते में कहाँ ठहरूँगा बारिश से बचने के लिए।

काम को निपटाकर जल्दी जल्दी मैं घर की ओर लौट ही रहा था कि देखा आसमान मेघाच्छादित हो चला है और बूँदा बाँदी शुरु भी हो गयी है। मैं उस समय रास्ते पर चल रहा था और सामने चौराहा दिख रहा था, चलते चलते मैने अपने बस्ते से छाता निकाला और खोल दिया, बगैर यह ध्यान दिए हुए कि आस पास कोई इंसान तो नहीं है। इतने में मुझे लगा कि मेरा छाता किसी से टकरा गया है, पास में देखा तो बगल के एक व्यक्ति के गर्दन में छाते का नुकीला कोना छू गया था, वह व्यक्ति अमर्षित हो उठा, उसके चेहरे का रंग लाल हो गया और क्रोध व आवेश के वशीभूत होकर उसने मेरी ओर तीक्ष्ण नजरों से देखा। एक साथ कई सारे विचार मेरे मन में कौंधे – कि आज दो दो हाथ कर ही लिए जाएँ, जो होगा देखा जाएगा, सामने वाला मुझसे डील डौल में अच्छा है कहीं ऐसा न हो कि मैं ही मुँह की खा जाऊँ। फिर पता नहीं मुझे क्यों लगा कि गलती मेरी ही है यह मेरे घर का कमरा नहीं है जहाँ मेरे अलावा कोई और नहीं होगा, यह तो चौराहा है और मैने ही आस-पास नहीं देखा यह विचार मन में आते ही मैने उससे तुरन्त माफी माँग ली और इसका इतना गहरा प्रभाव हुआ कि सामने वाले अनजाने व्यक्ति ने भी कोई बात नहीं कहकर, अपनी गर्दन को सहलाते हुए आगे बढ़ गया।

पूरे रास्ते मैं यही सोचता रहा कि अहं त्यागकर अपनी गलती स्वीकार लेने पर इस संसार के न जाने कितने झगड़े हल हो सकते हैं। मुझे संतकवि सुंदरदास का एक दोहा स्मरण हो आया –

'सुंदर पंजर हाड कौ, चाम लपेट्यौ ताहि।
तामैं बैठ्यौ फूलि कै, मो समान को आहि॥'

अच्युत शुक्ला
सहायक आचार्य, हिंदी
श्री ला.ब.शा.डि.कॉ.,गोंडा
चलभाष - 8182061798

विचार

खुद सुधरें, जग सुधरे

हम दो तरीकों से ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। पहला चिंतन द्वारा, जो सबसे उत्तम है, दूसरा अनुभव द्वारा जो सबसे कड़वा है। दूसरों के प्रति विचारशीलता अच्छे जीवन और अच्छे समाज का आधार हैं। यदि हमारे हृदय में मानवता का भाव है तो हमारा चरित्र सुंदर होगा, और यदि चरित्र सुंदर होगा तो परिवार में सद्भाव उत्पन्न होगा, सद्भाव से हमारा राष्ट्र व्यवस्थित होगा और इन सब को व्यवस्थित करने से पहले हमें अपने व्यक्तिगत जीवन को सुधारना होगा। हमें अपने लक्ष्यों के प्रति हमेशा अग्रसर रहना चाहिए और एक श्रेष्ठ व्यक्ति की तरह हमेशा नेक कार्य करना चाहिए न कि सामान्य व्यक्ति की तरह हमेशा आराम करना चाहिए। आराम करना आसान रास्ता है सभी इसी रास्ते को चुनते हैं। सभी अच्छी चीजे पाना बहुत ही मुश्किल है, और बुरी चीजे पाना बेहद आसान इसलिए जीवन में बदलाव- लाना जरूरी हैं। समय हमारे जीवन में अमूल्य हैं, जो नदी की तरह बह जाता हैं जो इस पर विजय प्राप्त कर लेता है वह शक्तिशाली योद्धा है। हमें जीवन में इस बात की चिंता कभी नहीं करनी चाहिए कि कोई हमें नहीं जानता बल्कि हमें जानने लायक बनने का प्रयत्न करना चाहिए। जो व्यक्ति दो चीजों के पीछे भागता है वह किसी चीज को भी हासिल नही कर पाता। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता की आप कितना धीमे चल रहे हैं, बल्कि ये मायने रखता है बिना रुके कितनी दूर तक आप चल रहे हैं इसलिए खुद के जीवन को सुधारिए और निरंतर आगे बढ़ते रहिए।

दिव्यांशी त्रिपाठी
बीए तृतीय सेमेस्टर
छात्रा संख्या- 219
संपर्कसूत्र – 9889206xxx

गाँव और शहर

शहर में निवास करने वाले लोगों की दिनचर्या बेड टी से प्रारंभ होती है, वहीं दूसरी तरफ गांव में निवास करने वाले लोगों की दिनचर्या नीम की पत्ती खाने से शुरु होती है। शहर के लोग बड़ी-बड़ी सड़कों पर बंद गाड़ी में चलते हैं और कई जगहों पर जाम लगने की वजह से लाइन में वाहन खड़ा कर भीड़ खत्म होने का इंतजार देर तक करते हैं, वहीं दूसरी ओर गांव के लोग कच्ची सड़कों पर अर्थात पगडंडियों पर धूल में नंगे पांव चलने का आनंद लेते हैं। शहरों में चारों तरफ बड़ी-बड़ी बिल्डिंग ही दिखाई देती है, जबकि गांव में लहलहाते हुए सुनहरे फसल, फलों से लदे हुए वृक्ष एवं कई जंगल और बाग दिखाई देते हैं। शहर के निवासी दफ्तर में काम करते हैं और गांव के निवासी खेतों में कठिन परिश्रम करते हैं, तब भी शहर के लोग सुख शांति नहीं प्राप्त करते, जबकि किसान अपनी खेती में ही सुख चैन प्राप्त कर लेते हैं। शहरों में विभिन्न प्रकार के वाहनों का शोरगुल सुनकर सिर में दर्द होना, जबकि गांव में कई प्रकार के जैसे- कोयल, गिलहरी, नेवला, गौरैया, कौवा, उल्लू, मोर तथा गाय, भैंस आदि पक्षियों एवं जानवरों के वाणियों को सुनकर अंतर्मन को शांति मिलती है। पक्षीगण शहरों में कभी-कभी दिखाई देते हैं, जबकि गांव में ये अपना घोंसला बनाकर निवास करते हैं और द्वार पर दाने चुगने भी आते हैं। शहरों में वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, तथा कार्बन डाइऑक्साइड की अधिकता आदि समस्याएं चतुर्दिक व्याप्त होती हैं, जबकि इन सभी समस्याओं का गांव में कोई जगह नहीं है, बल्कि ऑक्सीजन की अधिकता पाई जाती है। शहरों में लोग गैस चूल्हे का प्रयोग करते हैं तथा गांव में लोग मिट्टी के चूल्हे पर खाना पकाते हैं। शहर में लोग एसी और कूलर से हवा लेते हैं, जो की वायुमंडल में हानिकारक गैसें जैसे कार्बन डाइऑक्साइड, क्लोरोफ्लोरोकार्बन आदि फैलाते हैं, जबकि गांव के लोग प्राकृतिक हवा पेड़ पौधों से लेते हैं और ऑक्सीजन भी प्राप्त करते हैं। शहर में लोग वाहनों के दुर्गंध को सूंघते हैं, जबकि गांव में लोग सुनहरे पुष्पों के महक को सूंघकर प्रफुल्लित होते हैं। गांव के लोग बारिश होने पर प्रत्यक्ष आनंद लेते हैं, जबकि शहर के लोग खिड़की पर लगे शीशे के पीछे से इसका नजारा लेते हैं। गांव के लोग मनमोहक औधी बोलते हैं, वहीं शहर के लोग खड़ी बोली तथा अंग्रेजी बोलते हैं।

मधु दूबे
बी ए पंचम सेमेस्टर
छात्रा संख्या 241
मो. 8303922xxx

कविताएँ

युग निर्माण

आओ मिलकर एक नए युग का निर्माण करें
स्वामी विवेकानंद ने सपना देखा था,
दृढ़ निश्चय करके ठाना था ,
उन सपनों को मिलकर साकार करें,
आओ मिलकर एक नए युग का निर्माण करें..
सच कहा है किसी ने,
आज का युवा देश का भविष्य है,
उस युवा शक्ति का निर्माण करें ,
आओ मिलकर एक युग का निर्माण करें।

सौम्या सिंह
बी ए चतुर्थ सेमेस्टर
छात्र संख्या 328
8052556xxx

राह

एक लड़की जब राह चुनती है...
खुद के लिए ख्वाब बुनती है
कठिन समय व रस्तों से गुजरती है
कभी खुद से तो कभी समाज से लड़ती है
एक लड़की जब राह चुनती है..

एक लड़की धैर्य रखती है,
जब वह सच की राह चुनती है,
मार्ग के अवरोधों से लड़ने का हौसला रखती है,
खुद के साहस से
औरों के सपनों को भी उड़ान देती,
एक लड़की जब आसमाँ चुनती है,
रोका जाता है,
टोका जाता है,
जब कुप्रथाओं से लड़ती है
फिर भी वह बदलाव की कुछ उम्मीद रखती है,
एक लड़की जब राह चुनती है..

सम्मान, विश्वास ,साथ का वह भी हक रखती है
क्योंकि उसमे भी कुछ करने की इच्छा शक्ति बसती है,
खुद का ख्वाब पूरा कर,
सबके लिए ख्वाब बुनती है
एक लड़की जब रह चुनती है..

श्रद्धा मिश्रा
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

हिंदी विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा

स्त्री

बाजारों में निकलने का साहस तुम्हे जुटाना है,
है साथ दुनिया मगर, अपना रास्ता बनाना है,
देश हो समाज हो घर हो परिवार हो,
रास्तों के बीच में तुमको रास्ता बनाना है,
तुमने दिया जन्म तो जमाना आज है,
फ़िर देखो आज यहां कौन तुम्हारे साथ है,
तुम हो सक्त, मस्त, साहस का प्रतीक हो,
बस तुम्हे अपना अब अधिकार बताना है,
राह में हो काटे हजार, तुमको ही हटाना है,
स्त्री तुमको ही अपना जीवन बनाना है।

श्रद्धा मिश्रा
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर
छात्र संख्या - 1365
संपर्कसूत्र - 9120122xxx

चार कविताएँ

1.

मै ना जानू, रीति प्रीत की
बस गीत,नाम तुम्हारे गाता हूं।
मै ना जानू.....
स्वर्ग लिखा हूं, उस दिन को मै,
जिस दिन तू, राम स्तुति गाई थी।
स्वर्ग लिखा हूं,उस दिन को मै,
जिस दिन तू,कविता सुनाई थी।।
तेरी जुबां से निकला शब्द है मोती,
मै मोती का हार बनाता हूं।।
मै ना जानू.....
उस दिन वो रंगोली जो तुम,
मनमोहक खूब बनाई थी।
छवि मनोहर, दृश्य अनोखा,
देख ,मन ही मन, मुस्कायी थी।।
तुम मानो,या ना मानो,
मै हरपल तुम्हें मनाता हूं।
मै ना जानू.....

2.

तुम गीता की ज्ञान प्रिए ।
तुम मानस की चौपाई हो ।।
तुझमें सागर की गहराई ।
तुम पर्वत की ऊंचाई हो ।।
तुम गीता.....

हिंदी विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा

मर्यादा है आभूषण तेरा।
संस्कार है गहना।।
कोमल अधर,मधुर मुस्काने।
मीठी वाणी, नजरों का क्या कहना।।
हो तुम पवित्र सुधा की धार प्रिए।
तुम वेदों की प्रभुताई हो ।।
तुम गीता.....

3.

जल रही जवानी पी - पी कर शराब को।
सह रहा है भारत, नशा की आग को ।।
दो घूंट पी के मदिरा, हम घूमते अवारा।
तड़फ रही है बीबी, बच्चा रो रहा बेचारा।।
जल रही है बस्ती, मर रहे है लाखों।
फिर भी नही सुधरता, देश ये हमारा ।।
कोई तो बचाओ, अपने देश महान को ।
जल रही जवानी.....
हम मस्तियों में डूबे ,अय्यासबाजी करते।
मां बाप को देते गाली , शिक्षित खुद को कहते ।।
संस्कार, सभ्यता सब, हम बेचकर के खाए।
इज्जत रही ना लेकिन, खुद को महान कहते।।
कोई तो समझाओ, देश के नौजवान को।
जल रही जवानी.....

4.

दिल बेचने आया हूं,
क्या कोई खरीददार मिलेगा ?
अरे ले लो भाई, सस्ता है,
और उधार भी मिलेगा।
ना टूटा है,ना फूटा है,
ना कटा है, ना सिला है ।
अरे जला भी नही है,
जल्दी आओ, ताजा ही मिलेगा।
दस - बीस बिक चुका,
बस दो- चार ही बाकी है।
तुम्हारे लिए ही है,
अब रुकावट किस बात की है।
अरे खिलौना समझकर ले लो,
जी भर के खेलना।
जब जी भर जाए,
तोड़कर किसी कूड़ेदान मे फेकना।

अभिषेक शुक्ला 'नन्दन'
बी.ए. पंचम सेमेस्टर

हिंदी विभाग, लाल बहादुर शास्त्री पी.जी. कॉलेज, गोंडा

संघर्ष

जीवन राह पर काँटे भी होगे
घना अंधेरा भी होगा
मै पथ तुझे दिखलाऊँगी
राह पर दीपक भी जलाऊँगी ।
पर इस से अधिक मेरे बस मे कुछ
और नही बस अब होगा ।
संघर्ष तेरा है, तुझे ही लड़ना होगा ।
कई मुसीबत आएंगी
कदम नही हाटएंगे
हिम्मत कर के खड़े रहना
सफल तो हो जाएंगे ।
संघर्ष तेरा है, तुझे ही लड़ना होगा ।
तेरा रक्षा का न मोल है,
पर मानव अनमोल है,
भर ऊँची साहस तू।
बढ़ा इन अपने कदमो को,
घर से निकलकर बाहर आ ।
अपने लिए लक्ष्य खुद ढूंढना होगा,
संघर्ष तेरा है, तुझे ही लड़ना होगा
गिरने के डर से रूक मत जाना।
अपने सपनो को सरहद मत लगाना
जीत तो होगी पर पहले हार के लिए
आत्मविश्वास मजबूत करना होगा
संघर्ष तेरा है, तुझे ही लड़ना होगा ।
हर लक्ष्य को हासिल करना
ये मुमकिन तो नही।
इस बार जीत नही तो हार ही सही,
हर एक व्यक्ति जीत की और,
अग्रसर तेरा एक कदम होगा
हार हो या जीत क्या फर्क पड़ता है,
योद्धाओं के फेहरिस्त मे तेरा नाम तो होगा ।
संघर्ष तेरा है, तुझे लड़ना होगा ।

शालिनी
बी ए तृतीय सेमेस्टर
छात्रा संख्या- 363
मो- 7275921xxx

बेरोजगारी का हाहाकार

अबके समय मा बेरोजगारी ऐसी छाए है,
हरतरफ ही हाहाकार मचाए है,
एक नौकरी के पीछे भागत हैं हजार,
लेकिन तव पावत हैं दुई चार,
पढ़ा अनपढ़ सबका एकमा किहे है,
बेरोजगारी ऐसी छाए है।

यही सरकार का ना कछु दिखत है,
सब मारा मारा फिरत है,
सरकार सब आपन काम निकारत है,
तभो सब सरकार के पीछे भागत हैं,
सब अपने विधि से आपन रोजी रोटी चलाए हैं,
बेरोजगारी ऐसी छाए है।

शिवांगी दूबे

मेरे कान्हा

जब नयन मिले मेरे कान्हा से,
अजब सा मन में भाव जगा,
मानो सूखी रेत पर फिर से ,
खुशियों का आविर्भाव हुआ
खुशियों का आविर्भाव हुआ।

विचलित सा हुआ था मेरा मन,
थोड़ा बहुत घबराया था,
तब उसी समय मेरे कान्हा ने,
मुझको राह दिखाया था,
मुझको राह दिखाया था।

जीवन एक समन्दर है,
कभी शून्य तो कभी हलचल है,
जीवन के उसी एक क्षण में ,
जीवन का सार देख लिया,
जीवन का सार देख लिया।

शिवांगी दूबे
छात्र संख्या 498
मो 8882656xxx

हिंदी विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा

जगजननी संस्कृत

विश्व की समस्त भाषाओं की जननी है संस्कृत,
प्राचीन साक्ष्यों का प्रमाण है संस्कृत,
यदि संस्कृत ना होती तो वेद, पुराण ना होते,
श्लोकों एवं मन्त्रों का ज्ञान सिखाती है संस्कृत।

सदाचारी एवं परोपकारी बनाती है संस्कृत,
माता-पिता को माताश्री , पिताश्री तथा,
सुप्रभातम एवं गुरुदेव बोलना सिखाती है संस्कृत
।
यदि संस्कृत ना होती तो भारतीय संस्कृति ना होती,
संस्कृति के अभाव में भ्रष्टाचार व्याप्त होता,
विवेकी एवं गंभीर बनाती है संस्कृत,
चार पुरुषार्थों (धर्म ,अर्थ ,काम, मोक्ष) के पालन ,
का ज्ञान सिखाती है संस्कृत।

प्राचीन रहस्यों को समेटे है संस्कृत,
ऋषि, मुनियों के तप का ज्ञान कराती है संस्कृत,
एकता एवम मानवता का पाठ पढ़ाती है संस्कृत,
गीता, वेद, पुराण का ज्ञान कराती है संस्कृत,
वसुधैव कुटुंबकम् का उपदेश सिखाती है संस्कृत।

मधु दूबे

माँ

मां तुम कब आओगी घर?
जब से मां तुम गई हो परदेस ,
ऐसा कोई दिन रात नहीं ,
जब तुम ना आई हो याद ।
कभी-कभी तुम्हारी यादों में ,
आंखों से बहते हैं मोती सा आंसू ।

भीतर आंगन पूरा घर सूना लगता है ,
याद आते हैं तुम्हारे पैरों के वे नूपुर ,
जब भी बजती है कोई घंटी ,
याद आती है उन चूड़ियों की खनकार ।

आज भी बीमार होने पर ,
याद आते हैं तुम्हारे वे प्यारे हाथ ,
जिन्हें फेरने से हम हो जाते थे स्वस्थ ।

फीके लगते हैं ये सारे भोजन,
हमें तो याद आते हैं तेरे हाथों के वे पकवान ,
जब भी कोई डांटता है हम रो लेते हैं अकेले में ,
रोते ही सो जाते हैं कोई नहीं मनाता मुझको मां।

अकेले में बैठते हैं जब भी याद आती है मां ,
तुम्हारी सारी बातें और आशीष ,
हम हैं कितने भाग्यशाली ,
क्योंकि आप हो मेरी मां।

समय आ गया है मां अब ,
मैं भी कर दूं आशा तेरी पूरी ,
यही आशीष मुझे दो मां तुम ।

तेरे दूर चले जाने पर मुझे खटकती,
मां तेरी कमी का एहसास ।

हिंदी विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा

कैसे होंगे वे बच्चे जिनके नहीं होंगे मां पास ,
मेरी भी उम्र लग जाए मां तुझको,
संसार की सारी खुशियां कदम चूमे आपके,
यही है दुआ मेरी मां रब से।

मधु दुबे

नारी

नारी तुम क्यों हो इतनी कोमल?
ये वक्त नहीं रहा अब नजरों को झुकाने का,
ये वक्त है अब खड्ग धारण करने का।

नहीं रहा वो वक्त अब जौहर करने का,
क्योंकि तुम अब हो गई हो स्वतंत्र,
काट दो तुम उन भुजाओं को,
जो तुम्हें करे हों अपवित्र,
निकाल फेंक दो उन नजरों को,
जो तुम्हें देखते हों ओछी करतूतों से।

नहीं रहा ये वक्त अब गुहार का,
तुमको खुद बचाना है अपने स्वाभिमान को,
शेरनी बनकर तुम कर डालो गीदड़ों का संघार,
नहीं हो तुम अबला बता दो इस संसार को,
क्योंकि तुम हो दुर्गा ,चंडी ,काली का अवतार।

बन जाओ तुम झांसी की रानी,
कर दो तुम स्वयं दुष्टों की भरपाई।
है कौन सा जगत जहां नहीं तुम छाई?
तो फिर क्यूं अपने को अबला कहलवाई?

चांद, जल, वायु एवं हिमालय पर,
तुमने अपने सुनहरे कदम जमाए हैं।

मधु दूबे
बी ए पंचम सेमेस्टर
छात्रा संख्या 241
मो. 8303922xxx

यथार्थ ज्ञान

1.माया बंधनों से मुक्ति को जो खोज पाते हैं।
कैसे पार है जाना जो युक्ति खोज पाते हैं।
उन्हीं लोगों का तो संसार में कल्याण होता है,
जो जीवन जीने की सूक्ति को मन से खोज पाते हैं।

2.मानव का जन्म मिलना नहीं आसान होता है।
यही सदग्रंथ कहते हैं यही आभास होता है।
इसे प्रकार भी अपना लक्ष्य जो ना जान पाते हैं,
फिर ये रत्नवर हीरा यूं ही बेकार होता है।

3.व्यथित होकर के ना जो सम,दुःख सुख समझते हैं।
दूर होकर के इन सबसे विषयों में ना फंसते हैं।
वहीं पुरुष श्रेष्ठ हो करके होते मोक्ष के काबिल,
कुसंगति से विलग होकर जो सत्संगति में लगते हैं।।

4.परम तत्व की ही सत्ता में सभी प्रदीप पाते हैं।
उसी के तत्व के चिंतन से यश का दीप पाते हैं।
निरंतर ही चमकता है उनके ज्ञान का दीपक,
परम अभिलाषा रख करके वही संदीप पाते हैं।।

संदीप तिवारी
बी.ए. पंचम सेमेस्टर
8795181967

हिंदी विभाग, लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा

गजल

1.असफलताओं से बंधी हुई,जब सपनों की डोर हो
जीवन के प्रगति पथ पर, जब अंधियारा घनघोर हो।

2.उठो निरंतर प्रयत्न करो, निर्भय तुम बढ़ते जाओ
और स्वयं से कह दो यह, मैं क्षण भर नहीं रुकूंगा।

3.बाधाओं से भिड़ जाऊंगा, डट कर युद्ध करूंगा
जैसे पिपीलिका अपने से , सौ गुने भार उठाती है।

4.जैसे दीवारों पर मकड़ी, गिरकर भी चढ़ जाती है
वैसे मैं भी प्रगति पथ पर, अपना कदम बढ़ाऊंगा
असफलता से सफलता की ओर, विजयी परचम लहराऊंगा।

नाम – शैलेन्द्र कुमार द्विवेदी
कक्षा – बीए द्वितीय वर्ष / चतुर्थ सेमेस्टर
छात्र संख्या – 019
संपर्क सूत्र –7355501356

निबंध

राष्ट्रीय एकता

राष्ट्रीय एकता एक ऐसा भाव है जो व्यक्तियों के व्यक्तिगत हितों को त्याग कर राष्ट्र कल्याण के लिए प्रेरित करें। मनुष्य संकुचित विचारधाराओं से उठकर अपने आप को समस्त देश का नागरिक अथवा अंग समझने लगता है और देश के प्रति अपार भक्ति, कर्तव्य परायण, सेवा भाव आदि भाव आ जाते हैं। यदि देश के सभी नागरिक राष्ट्रीय एकता की भावना से भरे हो, तो हमारा देश उन्नति के शिखर पर चढ़ना रहेगा। जैसा की प्राचीन काल से ही भारत के उन्नति के द्वारा अवरुद्ध रहे हैं. आजादी से पूर्व अंग्रेजों ने फूट डालो राज करो की नीति अपना कर 200 वर्षों तक राज किया । 1857 की क्रांति भी एकता की कमी के कारण विफल रही। मुगलों ने भी एकता की कमी होने के कारण भारत पर शासन किया, आज भी हम कहीं ना कहीं क्षेत्रवाद जातिवाद के दलदल में फंसकर भारत की एकता व अखंडता को कमजोर बनाने प्रयास कर रहे हैं ।कहा भी गया है –
राष्ट्र एकता की जीवन में, जब तक बहती रसधार नहीं,
तब तक यह जीवन नीरस है खुलता उन्नति का द्वारा नहीं।

आज राष्ट्र की एकता अखंडता खंडित हो रही है । इसके महत्व को परिवार, विद्यालय, समाज जैसी छोटी-छोटी इकाइयों पर समझना होगा । जैसा कि हम जानते हैं आपसी फूट के कारण ही सोने की लंका जलकर राख हो गई थी। आज परिवारों में भी एकता की कमी है, ऐसे परिवेश में हम देश के शक्तिशाली , विकसित, सुखी और उन्नतिशील बनने की बात कैसे कर सकते हैं? मैथिलीशरण गुप्त जी ने देश से प्रेम न

हिंदी विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

करने वालों को तो पशु के समान बताया है। उन्होंने लिखा है –

जिनको न निज गौरव तथा निज का अभिमान है,
वह नर नहीं पशु निरा है और मृतक समान है।

इसके लिए हमें सभी के विचारों का सम्मान करना होगा विश्व बंधुत्व की भावना राष्ट्रीय गान, राष्ट्रीय गीत, राष्ट्रीय प्रतीकों का सम्मान व देश से प्रेम करना होगा। परिवार और समाज को जाति, धर्म, हीन भावनाओं और पूर्वाग्रहों से उठना होगा व जन-जन का सम्मान करना होगा। हम देश भक्ति गीत के माध्यम से गाते हैं – 'हम एक हैं ये हिंदोस्ताँ हमारा' एवं 'हिंद देश के निवासी हम सब एक हैं रंग रूप वेश भाषा चाहे अनेक है'। इन भावनाओं को हमें अपने जीवन में उतराना होगा।

हमें जन-जन को एकता के महत्व के बारे में बताना सभी धर्म का आदर करना होगा। आपसी फ़ूट के कारण ही आज आतंकवाद पनप रहा है। इससे बचने के लिए हमें सभी देशों से मैत्री संबंध बनाना होगा एवं एकता का भाव जागृत करना होगा । सभी धर्मो को समान मानना होगा, जैसा की हम पंक्तियां देखते हैं- हिंदू मुस्लिम सिख इसाई आपस में सब भाई-भाई परंतु अफसोस की बात यह है जब हम धरातल पृष्ठभूमि पर देखते हैं तो नजारा कुछ और ही है।

आज हम धर्म, जाति संप्रदाय के नाम पर एक दूसरे से लड़े जा रहे हैं एवं अपने देश की एकता व अखंडता को खोखला बना रहे हैं।हमें देश की एकता व अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखना होगा और हमें हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नारे "सबका साथ, सबका विकास " को साकार करना होगा इसके लिए एकता का होना परम आवश्यक है। अनेकता में एकता हमारी शान है, इसीलिए हमारा भारत महान है।

नाम : दीप्ति
बीए तृतीय सेमेस्टर
छात्रा सं. 737
मो. 8471048xxx

हिंदी विभाग, लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा

पुस्तक समीक्षा/ विमोचन

विभागीय उपलब्धि

श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोण्डा के एम.ए. तृतीय सेमेस्टर, हिंदी के विद्यार्थी जीतेशकांत पांडेय की पुस्तक का लोकार्पण 30 सितंबर 2024 को महाविद्यालय के ललिता शास्त्री सभागार में किया गया। 'नकल से कहीं क्रांति नहीं हुई' लोकार्पित पुस्तक का शीर्षक है। यह पुस्तक जनपद के प्रख्यात लेखक साहित्य भूषण डॉ. सूर्यपाल सिंह के साक्षात्कार पर आधारित है। महाविद्यालय के इतिहास में यह पहली बार हुआ है कि किसी अध्ययनरत विद्यार्थी द्वारा परीक्षा में प्रस्तुत परियोजना कार्य को गुणवत्ता के आधार पर निर्णय लेते हुए किसी प्रकाशन ने उसे पुस्तक रूप में प्रकाशित किया हो। यह पुस्तक एकेडमी प्रेस दारागंज, इलाहाबाद से मुद्रित एवं पूर्वापर प्रकाशन, गोण्डा से प्रकाशित हुई है।

महाविद्यालय के ललिता शास्त्री सभागार में प्रबंध समिति की उपाध्यक्ष वर्षा सिंह के मुख्य आतिथ्य में 'आत्मनिर्भर भारत' पर आयोजित संभाषण प्रतियोगिता समारोह में इस किताब का विमोचन किया गया।

इस अवसर पर देशबंधु कॉलेज, दिल्ली के प्रोफेसर और प्रसिद्ध दलित विमर्शकार बजरंग बिहारी तिवारी, स्वयं साहित्यकार डॉ. सूर्यपाल सिंह, प्राचार्य प्रो. रवीन्द्र कुमार, हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. शैलेन्द्र नाथ मिश्र, शिक्षा शास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रो. शिवशरण शुक्ल, वनस्पति विज्ञान के अध्यक्ष प्रो. श्रवण कुमार श्रीवास्तव, डॉ. रेखा शर्मा, प्रो. जय शंकर तिवारी, पवन कुमार सिंह सहित अनेक प्राध्यापक और छात्र-छात्राएं उपस्थित थे। इस मौके पर उपस्थित सभी ने जीतेशकांत पांडेय को बधाई दी।

कार्यक्रम का संचालन रसायन विज्ञान के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. मनोज मिश्र ने किया।

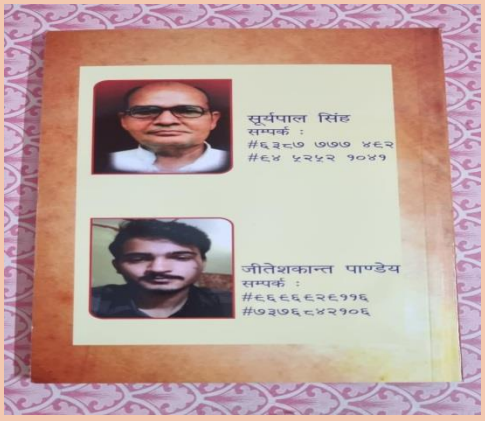

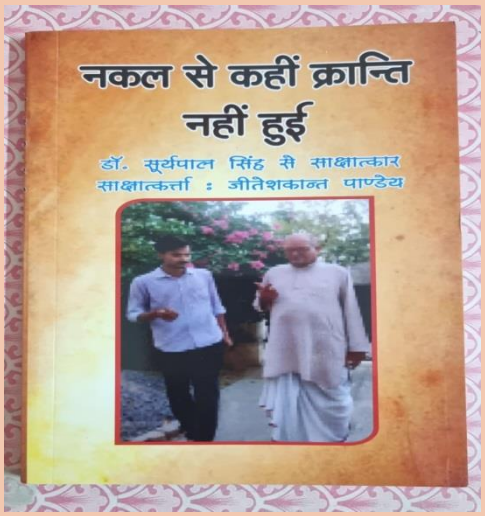

अगले अंक हेतु सूचना

(अक्टूबर-दिसंबर 2024, वर्ष 1, अंक 2 हेतु)

पत्रिका में सामग्री भेजने हेतु आवश्यक दिशा निर्देश -

* लेखन की भाषा अनिवार्य रूप से हिंदी तथा लिपि देवनागरी होगी।

* लेखन सामग्री त्रुटिरहित हो।

* लेखन सामग्री टंकित (टाईप्ड) हो तथा वर्ड फाइल (.doc या .docx) में होनी चाहिए।

* लेखन सामग्री के साथ अपना नाम, कक्षा, छात्र संख्या, पासपोर्ट साइज फोटो, तथा संपर्क सूत्र अवश्य दें।

* आपकी रचनाएँ/ विचार मौलिक होने चाहिए।

* आप एक से अधिक रचनाएँ भी भेज सकते हैं।

* केवल ई मेल के द्वारा प्राप्त रचनाओं पर ही विचार किया जाएगा

* यह आवश्यक नहीं है कि ईमेल पर भेजी गई सारी रचनाओं का प्रकाशन कर ही लिया जाएगा।

* अंतिम तिथि के पश्चात भेजी गई रचनाओं को सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

* आपके द्वारा भेजी गई रचना यदि पूर्व में कहीं किसी अन्य के द्वारा लिखी या बोली गई मिलती है तो उसे स्वीकार नहीं किया जाएगा। यह साहित्यिक चोरी के अंतर्गत आता है और प्रकाशन नैतिकता के मानकों पर खरा नहीं उतरता। ऐसी रचनाओं की छटनी कर दी जाएगी।

ईमेल achyut8795@gmail.com

लेखन सामग्री भेजने की अंतिम तिथि : 15 नवम्बर, 2024

टिप्पणी - अगर किन्हीं कारणवश पत्रिका का प्रकाशन नहीं हो पाता है तो रचनाकारों की रचनाओं को आगे के अंकों में सम्मिलित करके संयुक्तांक का प्रकाशन किया जाएगा।

(इस अंक में – कुल पृष्ठ 35, कुल शब्द 8824)

हिंदी विभाग श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज गोंडा